<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="maith -w-media-		"	lang="Maithili">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-Multilingual parallel text corpora		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures and tables have been omitted. Samples taken from page 25-28		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Essays	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	BanaBatt	</title>
	<author>	Krishna Murthy	</author>
	<language>	Maithili	</language>
	<translator>	RamDev Jha	</translator>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>	Chandi Shatak	</headline>
	<words>		</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	Sahitya Akademi	</publisher>
	<pubDate>	1989	</pubDate>
</imprint>			
<index>		Ch-3	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>		</date>
	<inputter>	H.S.Rupa	</inputter>
	<proof>		</proof>
</creation>			
<langUsage>			</langUsage>
<wsdUsage>			
<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>			
</wsdUsage>			
<textClass>			
<channel mode="w">		print	</channel>
<domain type="public">			</domain>
</textClass> </profileDesc>			

</Header>		
<text><body>		
<p>	चण्डी शतक एकैस वर्णक स्रग्धरा छन्द निबद्ध, एक सय पदक स्तोत्र थिक जकर प्रत्येक पदमे देवीक स्तुति विशिष्ट रूपमे कयल गेल अछि। स्तुति सामान्य समृद्धि एवं कल्याण लेल कयल गेल अछि एवं एकर प्रत्येक पदमे विविध रूपेँ सामान्य मनोभावक अभिव्यक्ति भेल अछि। परन्तु प्रत्येक श्लोक, महिषासुरक संग देवीक महिमामय युद्धक सजीव शब्द चित्र थिक। द्वन्द्वयुद्ध कालक, भगवतीक विविध मुद्राकेँ केन्द्रित कऽ जे विलक्षण वर्णन कयल गेल अछि से लगैछ जेना युद्ध-क्षेत्रक विभिन्न भागक छाया-चित्र लेल गेल हो। एहि युद्धक दर्शक छथि स्वर्गक विभिन्न देवता लोकनि जे असुरक पराक्रमसँ पहिनहि पराजित भऽ गेल छलाह।	</p>
<p>	एहि स्तुति-शतक पर विद्वान् लोकनिक ध्यान बड़ कम्मे गेलनि जकर कारण सम्भवतः एहि पदक धार्मिक होयब अछि आ पद सबमे बाण द्वारा रचित होयबाक निश्चित संकेतक अभाव अछि। एहि कृतिक सुरक्षित पाण्डुलिपिक साक्ष्य एवं प्राचीन विद्वानक काव्यशास्त्रमे प्राप्त कतोक उद्धरण निश्चित रूपसँ एकर निर्णायक अछि आ हमरालोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचि सकैत छी जे बाण निस्सन्देह एहि चर्चित स्तोत्र-शतकक रचना कयने छलाह।	</p>
<p>	हुनक द्वारा प्रस्तुत विभिन्न मिथक एं निजंधरी कथाक सन्दर्भसँ सिद्ध भऽ जाइत अछि जे बाण पुराण एवं पुराकथा सबसँ पूर्ण परिचित छलाह। कोनो पुराणक विविध वर्ण्य सामग्रीमे महत्त्वपूर्ण अंश ओकर स्तोत्र शास्त्र थिक। हमरा लोकनिकेँ ई मानबामे कोनो तारतम्य नहि होयबाक चाही जे सम्प्रति उपलब्ध पुराणमे सँ अधिकांश अनुमानतः संक्षिप्त रूपमे बाणक समयमे, पूर्वहिसँ प्रचलित छल। पुराण-वर्णित हिन्दू देवी-देवता शिव, विष्णु, सूर्य, गणपति एवं दुर्गाक स्तोत्र परम्परया वैदिक ऋचासँ कम पवित्र नहि मानल जाइत छल। यद्यपि वेदक स्तोत्र आर्ष प्रयोगक कारणे अधिकांश लोकक बोधगम्यता केर परिधिसँ बाहर छल परन्तु पुराणक स्तोत्र सामान्य जन समुदाय लेल सहज बोधगम्य छल। वैदिक स्तोत्र कठिन याज्ञिक क्रिया सबसँ भरल छल, जकर निष्पादन धनाढ्ये वर्ग द्वारा सम्भव छल। परन्तु महाकाव्य आ पौराणिक स्तोत्रक उपयोग अपन इष्ट देवताक नित्य अर्चना लेल अपन घरमे वा सार्वजनिक पूजा-स्थल पर कयल जा सकैत छल। यैह कारण छल जे ओ लोकप्रिय भऽ गेल।	</p>
<p>	किन्तु पौराणिक स्तोत्रमे काव्य-गुण अल्प अछि। एकर लोकप्रियता धार्मिक-मूल्य पर निर्भर छल एवं जनता एकर काव्यत्व दिस बेसी ध्यान नहि दैत छल। परन्तु बाणसँ पूर्व कालिदास एवं अन्य कविगण धार्मिक भावनाकेँ परिष्कृत साहित्यिक शैली एवं विन्यासमे व्यक्त कऽ काव्य क्षेत्रक एक नवीन मूर्त स्वरूपमे अथछवा व्यस्त मुद्रामे प्रदर्शित कयल जाइत छनि, लगैत अछि जेना कलाकारक आगाँ चित्रांकनक हेतु ओ नमूनाक रूपमे बैसल होथि। एहन सुस्पष्ट सजीव शब्दचित्र हमरा लोकनिक मोनकेँ मोहि लैत अछि आ भावनाकेँ अत्यन्त प्रभावशाली ▯गसँ अभिव्यक्त करेत अछि।	</p>
<p>	भारत सन देशमे, धार्मिक प्रार्थनाक यन्त्रवत् पुनरावृत्तिकेँ साहित्य-लेखन मे पुण्य कर्म मानल जाइत छल, जा तेँ कोनो आश्चर्य नहि जे, जे लोकनि, धार्मिक भावना एवं उत्साहमे स्तोत्रक रचना कयलनि, तनिका एहि जगतमे विशेष दैवी कृपाक पात्र मानल गोलनि। संस्कृत-साहित्यमे कोनो एहन रचनाकार नहि छथि जे पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष होथि। ओ लोकनि अपन रचनामे वाच्यार्थ वा व्यंग्यार्थ द्वारा अपन धार्मिक निष्ठाक संकेत देबाक लेल प्रतिबद्ध छलाह। सम्भवतः लोकमे यशस्वी होयबाक लेल ई आवश्यक छल।	</p>

<p>	परन्तु कविक द्वारा वर्णित धार्मिको भावनामे रूप-परिवर्तन भऽ जाइछ। भावना, प्रार्थना मात्र धरि सीमित नहि रहैछ, बल्कि ओ सम्पूर्ण परिस्थिति, जाहिमे ईश्वरक कल्पना होइत अछि, मानवीय स्वरूप एवं सौन्दर्य-बोधक पुट देबाक लेल निरूपति होइत अछि। प्रेम, शौर्य वा विस्मय; सब लेल एकहिटा भावात्मक केन्द्र रहैत अछि जाहिसँ अन्य सहचारी भाव एवं क्रिया निष्पन्न होइत अछि अथवा प्रायः सबटा ओहीमे समाहित होइत अछि। संस्कृत नाटकक प्रारम्भमे प्रायः एख-दू गोट एहन शब्दचित्र (नान्दी) रूपसँ भेटैत अछि। एहन सन प्रतीत होइछ जे बाण एहन सय गोट पदक रचनाक प्रयास अपन क्षमता प्रकट करबाक लेल कयलनि अछि।	</p>
<p>	मार्कण्डेय पुराणमे देवी महात्म्यक मुख्य कथा महिषासुर पर देवीक चमत्कारीक विजय थिक। परन्तु घटना-प्रसंगक अतिरिक्त बाण ओखर ऋणी नहि छथि। परन्तु बाण एखटा रचनात्मक कलाकार छथि आ कथाक चरमोत्कर्षमे युद्धक जीवन्त दृश्यकँ अपन कलात्मक कल्पनाशीलतासँ अपना ढंगे पुनः सर्जन करैत छथि। नाटकक नायिका छथि स्वयं भगवती एवं एखलनायकक रूपमे अछि असुर। देवीक प्रादुर्भावसँ पूर्व असुर अपन बलवीर्यसँ सब देवता पर एका-एकी आ सामूहक रूपेँ विजय प्राप्त कऽ चुकल अछि। ओकरा संग भेल अनेको घात-प्रतिघातक बाद देवी लीलापूर्वक अपन बामा चरणसँ असुरक मस्तक पर प्रहार करैत छथि आ असुरक मृत्यु भऽ जाइछ। संसारकँ भय एवं संकटसँ मुक्ति मेटि जाइत छैक। यैह अन्तिम दृश्य थिक जे बाणख कल्पना शक्तिकँ आकर्षित कयलक एवं सम्पूर्ण स्तोत्र-शतककँ एकहि कथाक विभिन्न रूप कहल जा सकैछ। कतेक सफलतासँ ओ भाषा, अलंकार आ वर्णनक वैविध्य प्रस्तुत कयलनि अछि से प्रशंसनीय अछि। एहि दृष्टिसँ विचार कयला पर एहि ठाम दीर्घ एवं प्रभावशाली छन्द-विनियोजन सर्वथा उपयुक्त बूझि पड़त। बाणक संस्कृत काव्यकृतिक अद्वितीय सौन्दर्यकँ अन्य कोनो भाषामे अनुवाद द्वारा यथावत् प्रस्तुत कऽ देब सम्भव नहि अछि। केवल तीन गोट विशिष्ट पद्यक (मूल सहित) भाव गद्य रूपमे प्रस्तुत अछि।	</p>
<p>	मृत्योस्तुल्यं त्रिलोकीं ग्रसितुमतिरसान्निःसृताः किं नु जिह्वाः	</p>
<p>	किं वा कृष्णाङंगिघ्रपदमद्युतिभिररुणिता विष्णु पद्याःपदव्यः।	</p>
<p>	प्राप्ताः सन्धयाः स्मरारेः स्वयमुत नुतिबिस्तिस्र इत्यूह्यमाना	</p>
<p>	देवैर्देवीत्रिशूलाहतमहिषजुषो रक्तधारा जयन्ति।।[1] (चण्डीशतक, काव्यमाला संस्करण, बम्भइ, 1899, पद-4)	</p>
<p>	‘देवीक त्रिशूलसँ मारल गेल महिषासुरक अंगसँ	</p>
<p>	बहरायल रक्तक पमारा देखि देवता लोकनि तर्क-वितर्क करऽ लगलाह जे ई तीनू लोककँ गीड़ि जयबाक लेल लपलपाइत मृत्युक जिह्वा थिक? की विष्णुक चरणकमलक अरुणिमा युक्त गंगाक धारा थिक? अथवा की कामारि शकरक सन्धोपचार ग्रहण करबाक लेल तीनू सन्ध्या चललि छथि? (ओ देवी सभक रक्षा करथु!)’	</p>
<p>	विद्राणे रुद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे	</p>
<p>	जाताशके शशांके विरमति मरुति त्यक्तरवैरे कुबेरे।	</p>
<p>	वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषामतिरुषं पौरुषपाध्ननिघ्नं	</p>
<p>	निर्विध्न निघ्नती वःशमयतु दुरितं भूरिभावा भवानी।।[2] (तत्रैव, पद-66)	</p>
<p>	‘जखन रुद्रक गण पलायन कऽ गेलाह। सूर्य विचलित भऽ गेलाह। इन्द्रक हाथसँ वज्र ससरि गेलनि। चन्द्रमा आशकासँ भरल छलाह। मरुत स्तब्ध छलाह। कुबेर अपन वैरकँ त्यागि देलनि।	</p>

	वैकुण्ठक विष्णुक चक्र कुण्ठित भऽ गेलनि। तखन उपद्रवी बलवान महिपासुरकेँ निर्विघ्न मारि पृथ्वीसँ दुष्टकेँ लोप करयवाली भगवती हमरा लोकनिक दुरितक शमन करथु।’	
<p>	चक्रं चक्रायुधस्य क्वणति निपतितं रोमणि ग्रावणीव	</p>
<p>	स्थाणोर्वाणश्च लेभे प्रतिहतिमुरुणा चर्मणा वर्मणेव।	</p>
<p>	यस्येति क्रोधगर्भ हसितहरिहरा तस्य गीर्वाणशत्रोः	</p>
<p>	पायात्पादेन मृत्युं महिषतहरिनुभृतः कुर्वती पार्वती वः।।* (	</p>
<p>	‘विष्णुक चक्र ओकर रोमक स्पर्श करिते भनझना उठल जेना कोनो पाषाणसँ टकरा गेल हो। ओकर कठोर त्वचाक स्पर्श करिते शिवक बाण परावर्त्तित भऽ गेलनि, जेना कोनो कवचसँ टकरायल हो; एहि प्रकारेँ जकरा द्वारा विष्णु एवं शिवक उपहास कयल गेल हो, देवताक एहन शत्रु महिषासुरकेँ एक पयरसँ वध कयनिहारि भगवती हमरा सभक रक्षा करथु।’	</p>
<p>	अपन प्रतिभाक उपयोग हेतु कवि द्वारा चुनल गेल निश्चित कथा-प्रसंग एवं हुनक आद्योपान्त रचनामे सुस्पष्ट कल्पनाक सीमित उड़ानक जखन हमरा लोकनि अवलोकन करैत छी तँ हमरा लोकनि एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे ई बाणक पहिल अथवा अपरिपक्व रचना रहल होयतनि, जखन ओ अपन कलाक चरमोत्कर्ष प्राप्त करबाक हेतु क्रमिक कलाभ्यासे कऽ रहल छलाह। हुनक विचार एवं कल्पना, दुनू सहज होयबाक अपेक्षा बेसी पारम्परिक अछि एवं हमरा लोकनिकेँ हुनक कोनो पद्यमे हुनक भव्य कल्पना-विलास नहि भेटैत अछि। एहि प्रकारेँ, यद्यपि एहि पद्य सबमे परिपक्वताक अभाव अछि परन्तु एकर अविच्छिन्न गरिमा एवं भक्तिभाव स्मरणीय अछि। स्तोत्र-काव्यमे एकटा प्रयोगक रूपमे एकर स्थान अवश्ये सुरक्षित अछि। अपन समकालीन एवं परवर्त्ती रचनाकारक शतक-रचनाक तुलनामे एहि रचनाक प्रतिष्ठा कम नहि होइत छैक। दू गोट मात्र उदाहरण ली; मयूर केर सूर्य शतक एवं तद्वत आनन्दवर्धनक देवीविषयक शतक पाणि□त्य-प्रदर्शनपूर्ण एवं शब्दा□म्बरुपूर्ण बेसी अछि आ काव्यात्मकता प्रदान करबामे कममे सफल भेल अछि। बाणक यद्यपि ई आरम्भिक रचना थिकनि परन्तु हमरा लोकनि अनुभव कऽ सकैत छी जे ई एकटा उदीयमान प्रतिभाक आरम्भिक रचना थिक, ने कि कोनो प्रतिभाहीन कविक नीरस प्रयोग। धार्मिक क्षेत्रमे, शतक शीघ्रे बाणक नाम एवं यशकेँ स्थायी रूपेँ सुरक्षित कऽ देलक। प्रायः प्रत्येक प्राचीन कन्नड़ कवि बाणकेँ महान् धार्मिक शैव कवि मानि हुनका प्रति अपन श्रद्धा प्रकट करैत छथि। एकर कारण ओ स्तोत्र सेहो भऽ सकैत अछि जे बाण-गद्यक नामसँ पहिनहि उल्लिखित भऽ चुकल अछि।	</p>

</body></text>
</Doc>